गुरु नानक - सबद ११०

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ९१

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥
कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि ॥
सचु संजमु करणी काराँ नावणु नाउ जपेही ॥
नानक अगै ऊतम सेई जि पापाँ पंदि न देही ॥१॥

सार: "अछूत" की अवधारणा उन भ्रष्ट दूषित, मानसिक अवस्थाओं का प्रतीक है जो हमारी चेतना को गिराती हैं। यह नकारात्मक प्रवृत्तियाँ ऐसी सामाजिक श्रेणियाँ रचती हैं जो लोगों को अलग-थलग करती हैं और उन्हें हानि पहुँचाती हैं। जब इन पर ध्यान नहीं दिया जाता है तब यह द्वैत, पूर्वाग्रह और तिरस्कार पैदा करती हैं जिसके परिणामस्वरूप ऐसे विभाजन होते हैं जो सामाजिक लग सकते हैं लेकिन वास्तव में हमारे भीतर से उत्पन्न होते हैं। जैसे-जैसे हम सामाजिक पहचान से ध्यान हटाकर एकता की जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करके इस भ्रष्टाचार को पहचानते हैं और संबोधित करते हैं, विभाजनों की आवश्यकता कम हो जाती है और समानता स्वाभाविक रूप से हमारी सांझी मानवता की गहरी समझ के रूप में उभरती है।

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥
भ्रमित बुद्धि नीच जाति के समान है, क्रूरता कसाई है, भीतर की निंदा अछूत है और क्रोध चांडाल है। यह उपमा नकारात्मकता प्रवृत्तियों की विनाशकारी प्रकृति को उजागर करती है, इसकी तुलना एक ऐसी सामाजिक श्रेणी की तरह काम करती है जो पीड़ा को बनाए रखती है।

कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि ॥
पवित्र शुद्धता की रीति-रस्म की सीमा खींचने से क्या लाभ जब यह चारों अभी भी मन में रहते हैं? यह बताता है कि सच्ची पवित्रता के लिए आंतरिक परिवर्तन की आवश्यकता है न कि केवल बाहरी अनुष्ठानों की।

सचु संजमु करणी काराँ नावणु नाउ जपेही ॥
पवित्रता की रस्म की रेखाएं ईमानदारी, आत्म-नियंत्रण के संयम और नेक कर्मों के रूप में खींचो और आत्मचिंतन के अभ्यास से स्वयं को शुद्ध करो।

नानक अगै ऊतम सेई जि पापाँ पंदि न देही ॥१॥
नानक कहते हैं, वास्तव में ऊंचे श्रेष्ठ वही हैं जो अपनी चेतना को नकारात्मकता के मार्ग पर नहीं चलने देते। (१)

तत्त्व: गुरु नानक आंतरिक अशुद्धि के विचार को व्यक्त करने के लिए सशक्त रूपकों का उपयोग करते हैं। यह पद बाहरी या सामाजिक शुद्धता बनाए रखने की विडंबना को उजागर करता है जबकि क्रोध, क्रूरता और निंदा जैसे दोष भीतर बने रहते हैं। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि सच्ची पवित्रता किसी के पेशे या आर्थिक स्थिति के आधार पर सीमाओं या विभाजनों से निर्धारित नहीं होती बल्कि पूर्वाग्रहों को दूर करने और दयालु जागरूकता को बढ़ावा देने से पैदा होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com